1 कुरिन्थियों 1
रविवार 01 सितंबर, 2019

परिचय
हम कुरिन्थियों के विश्वासियों के नाम पौलुस की पहली पत्री के अपने अध्ययन की शुरुआत, कुरिन्थ नगर की संक्षिप्त पृष्ठभूमि के साथ करते हैं।

कुरिन्थ
कुरिन्थ नगर की स्थापना 44 ई.पू. में जूलियस सीज़र द्वारा अपने प्राचीन स्थान पर पूर्व सैनिकों की एक बस्ती के रूप में की गई थी। 27 ई.पू. में यह अखैया के रोमी प्रांत की राजधानी बना और पहली शताब्दी ईस्वी में इसका व्यापक पुनर्निर्माण हुआ, जिसमें एक फोरम, बड़े सार्वजनिक स्नानागार और एक एम्फीथिएटर का निर्माण शामिल था। कुरिन्थ ऐश्वर्य, दुराचार, अनैतिकता और भोग-विलास के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध था। यूनानी लेखक अक्सर कुरिन्थ को व्यापारिक प्रेम का नगर बताते थे और "कुरिन्थ की कन्या" का अर्थ वेश्या होता था।

पौलुस के समय में कुरिन्थ का यूनानी नगर एक बंदरगाह नगर था, जिसमें दो बंदरगाह थे और यह एक फलता-फूलता व्यापारिक केंद्र था, जिसे "यूनान का आभूषण" कहा जाता था, और जिसकी अनुमानित जनसंख्या लगभग 2,00,000 लोगों की थी।

अपोलो और अफ्रोदिती
कुरिन्थ में अपोलो का मंदिर और अफ्रोदिती का मंदिर था।

अपोलो यूनानी देवता था, जो कई बातों से संबंधित माना जाता था, जिनमें सूर्य, प्रकाश, ज्ञान, चिकित्सा, संगीत, कविता, कला, भविष्यवाणी, तीरंदाजी और महामारी शामिल थे। कुरिन्थ के निचले नगर में अपोलो का मंदिर स्थित था, जिसमें मूल रूप से 38 स्तंभ थे, जिनमें से आज 7 खड़े हैं।

अफ्रोदिती प्रेम की यूनानी देवी थी। कुरिन्थ का एक्रोपोलिस (प्राचीन यूनानी नगर का गढ़ या किला, जो सामान्यतः पहाड़ी पर बनाया जाता था) **एक्रोकोरिन्थ** कहलाता है, और यह आस-पास के मैदान से लगभग 1800 फीट ऊँचा उठता है। इसकी सबसे ऊँची चोटी पर अफ्रोदिती का मंदिर था। बताया जाता है कि इस मंदिर में 1,000 पुरुष और स्त्री मंदिर-वेश्याएँ कार्यरत थीं, हालांकि यह जानकारी निश्चित नहीं है।

जैसा कि पौलुस 1 कुरिन्थियों में स्पष्ट रूप से पहचानता है, पौलुस के समय की कुरिन्थ की कलीसिया के कई विश्वासी सांसारिकता और लैंगिक पापों से संघर्ष कर रहे थे, जो इस विश्वनागरिक शहर की विशिष्ट विशेषताएँ थीं।

आगोरा (बाज़ार)
कुरिन्थ में पौलुस की भेंट अक्विला और प्रिस्किल्ला से हुई, जो यहूदी थे और जिन्हें सम्राट क्लौदियुस द्वारा हाल ही में रोम से निकाल दिया गया था। ये तीनों तंबू बनाने वाले (या चमड़े का काम करने वाले) थे और

संभव है कि उनका व्यवसाय नगर के व्यापारिक बाज़ार (आगोरा) में रहा हो। इससे पौलुस को ग्राहकों और आने-जाने वालों से मसीह के पुनरुत्थान के विषय में बात करने के अनेक अवसर मिले होंगे। प्रेरितों के काम में लिखा है कि पौलुस हर सब्त के दिन यहूदियों और यूनानियों को समझाने का प्रयास करता था।

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान (ई. 49–ई. 52; प्रेरितों के काम 15:36 – प्रेरितों के काम 18:22), वह कुरिन्थ गया और कुरिन्थ में 18 महीनों तक रहा।

- पौलुस कुरिन्थ में लगभग 18 महीनों तक ठहरा (प्रेरितों के काम 18:11)। **अक्विला और प्रिस्किल्ला** यहूदी विश्वासी थे, जो रोम से कुरिन्थ आए थे, क्योंकि ई. 49 में रोमी सम्राट क्लौदियुस द्वारा एक आज्ञा जारी की गई थी, जिसमें सभी यहूदियों को रोम छोड़ने का आदेश दिया गया था (प्रेरितों के काम 18:1–3)। वे पौलुस के साथ मिलकर तंबू बनाने का काम करते थे और सेवकाई भी करते थे। पौलुस को फिलिप्पी से भी कुछ सहायता भेजी जाती थी (1 कुरिन्थियों 9:1–10, 2 कुरिन्थियों 11:6–10, फिलिप्पियों 4:15,16)। **सिलास और तीमुथियुस** मकिदुनिया से आए और कुरिन्थ में पौलुस, अक्विला, प्रिस्किल्ला और **लूका** के साथ जुड़ गए (प्रेरितों के काम 18:5)।
- पौलुस ने प्रारंभ में यहूदियों और परमेश्वर से डरने वाले अन्यजातियों को आराधनालय में सुसमाचार सुनाया। अधिकांश यहूदियों द्वारा नकारे जाने के बाद, उसने आराधनालय के बाहर अन्यजातियों को सुसमाचार का प्रचार किया।
- कुरिन्थ में किए गए कार्य से अच्छा फल उत्पन्न हुआ।
- यह बहुत हद तक संभव है कि कुरिन्थ में पौलुस के 18 महीनों के समय के दौरान, कुरिन्थ के आस-पास के क्षेत्रों में भी सुसमाचार फैलाया गया, जिनमें **केंख्रिया** भी शामिल था, जो कुरिन्थ का एक पूर्वी समुद्री बंदरगाह था, और नगर के केंद्र से लगभग सात मील दूर था, साथ ही अखैया के अन्य भागों में भी। पौलुस ने **फीबे** नाम की एक बहन के विषय में लिखा, जो केंख्रिया की कलीसिया की सेविका थी (रोमियों 16:1)।
- जब पौलुस कुरिन्थ से रवाना हुआ, तो प्रिस्किल्ला और अक्विला उसके साथ गए (प्रेरितों के काम 18:18)।
- कुरिन्थियों के नाम पौलुस की उन पत्रियों से, जिन्हें उसने बाद में लिखा, हमें पता चलता है कि वहाँ एक फलती-फूलती, आत्मा से भरी हुई कलीसिया स्थापित हो चुकी थी। यद्यपि इस कलीसिया में कई व्यावहारिक समस्याएँ थीं, फिर भी यह एक जीवंत समुदाय था, जहाँ परमेश्वर का आत्मा स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहा था।
- ई. 52 के शुरुवाती समय में, पौलुस और उसकी टीम **अक्विला और प्रिस्किल्ला** के साथ कुरिन्थ से लगभग 12 मील दूर **केंख्रिया** गए। केंख्रिया से पौलुस इफिसुस गया और फिर **यरूशलेम** चला गया, और अक्विला और प्रिस्किल्ला को इफिसुस में छोड़ दिया। इसी समय सिकन्दरिया (मिस्र में) से **अपुल्लोस** नाम का एक विश्वासी इफिसुस आया। अपुल्लोस बहुत वाक्पटु और प्रभावशाली वक्ता था,

परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा तक की बातों को ही जानता था।

अपुल्लोस का प्रवेश

प्रेरितों के काम 18:24–28

24 अपुल्लोस नामक एक यहूदी, जिसका जन्म सिकन्दरिया में हुआ था, जो विद्वान पुरुष था और पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से जानता था, इफिसुस में आया।
25 उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय ठीक ठीक सुनाता और सिखाता था, परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था।
26 वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने यहाँ ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक ठीक बताया।
27 जब उसने निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें; और उसने वहाँ पहुँचकर उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था।
28 क्योंकि वह पवित्रशास्त्र से प्रमाण दे देकर कि यीशु ही मसीह है, बड़ी प्रबलता से यहूदियों को सब के सामने निरुत्तर करता रहा।

अक्विला और प्रिस्किल्ला ने अपुल्लोस की सहायता की, कि वह यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान तथा पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के विषय में सत्य को भली-भाँति समझ सके। इसके बाद उन्होंने उसे कुरिन्थ की कलीसिया में भेजा (जो अखैया प्रांत में थी)। अपुल्लोस कुरिन्थ की कलीसिया के लिए एक महान आशीष सिद्ध हुआ।

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान (ई. 53–ई. 58; प्रेरितों के काम 18:23– प्रेरितों के काम 21:15), वह लगभग तीन वर्षों तक इफिसुस में रहा।

- इफिसुस में रहते हुए पौलुस ने **गलातियों के नाम पत्री लिखी**। उसने कुरिन्थ की कलीसिया की समस्याओं को संबोधित करने के लिए **पहला कुरिन्थियों भी लिखा**, जिनके विषय में उसे सूचना मिली थी। यह पहली पत्री या तो कुरिन्थ से आए लोगों द्वारा, या तीतुस के द्वारा कुरिन्थ पहुँचाई गई होगी।
- इफिसुस से पौलुस **मकिदुनिया** गया (प्रेरितों के काम 20:1), जिसमें निम्न नगर शामिल थे (निअपुलिस, फिलिप्पी, थिस्सलुनीके, बेरेया)। मकिदुनिया में रहते हुए पौलुस ने **दूसरा कुरिन्थियों लिखा।**

कुरिन्थ की कलीसिया की स्थापना लगभग ई. 51 में हुई थी। पहला कुरिन्थियों लगभग ई. 58 में लिखा गया था, अर्थात् इस स्थानीय कलीसिया की स्थापना के लगभग सात वर्षों बाद।

इस संक्षिप्त पृष्ठभूमि के साथ, अब हम पहला कुरिन्थियों के अपने अध्ययन में आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं।

<u>**अध्याय एक**</u>

अभिवादन

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया और भाई सोस्थिनेस की ओर से,
2 परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।
3 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

- **वचन 1:**

जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया,
बुलाया गया (यूनानी *'kletos'-'क्लेटोस'*) अर्थात आमंत्रित किया हुआ, नियुक्त किया हुआ

प्रेरित (यूनानी *'apostolos'-'अपोस्टोलोस'*) वह जो आज्ञा के साथ भेजा गया हो, प्रतिनिधि, राजदूत, अधिकार के साथ नियुक्त किया गया व्यक्ति, संदेशवाहक; यह शब्द उन लोगों के लिए भी प्रयुक्त होता है जिन्हें प्रेरित के वचन के लिए बुलाया गया हो।

हमारी बुलाहट परमेश्वर की इच्छा के कारण है। परमेश्वर ने ऐसा चाहा। <u>जब हम अपनी बुलाहट का अनुसरण करते हैं, तो हम परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण करते हैं।</u> जब हम अपनी बुलाहट को पूरा करते हैं, तो हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं। परमेश्वर ने आपको जो कुछ करने के लिए बुलाया है—जैसे गृहिणी, व्यवसायी, सामाजिक कार्यकर्ता, पासवान, भविष्यद्वक्ता आदि—वही आपके लिए परमेश्वर की इच्छा है। उसका अनुसरण करिए और उसे पूरा करिए।

सोस्थिनेस, सम्भवतः वही व्यक्ति है जिसके विषय में हम प्रेरितों के काम 18:17 में पढ़ते हैं, जो उस आराधनालय का प्रधान था जहाँ पौलुस प्रचार करता था। उस समय भीड़ ने उसे मारा था। ऐसा प्रतीत होता है कि वह पौलुस की प्रेरितिक सेवकाई की टीम का हिस्सा बन गया था, और जिस समय यह पत्री लिखी गई, उस समय वह पौलुस के साथ इफिसुस में था।

- **वचन 2:**

परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है

कलीसिया (यूनानी '*ekklesia*'- *'एक्क्लेसिया'*) उन लोगों की सभा है जिन्हें किसी उद्देश्य के लिए बुलाया गया है।

यहाँ दो विरोधाभास देखना रोचक है: कलीसिया और नगर।
परमेश्वर की कलीसिया पवित्र किए गए लोग हैं, अर्थात पवित्र जन।
नगर, इस स्थिति में कुरिन्थ, एक 'पाप का नगर' था जो अपनी अनैतिकता के लिए जाना जाता था।
यद्यपि अक्सर ऐसा होता है कि कलीसिया संख्या में अल्प (कम) होती है, <u>फिर भी परमेश्वर की कलीसिया को नगर पर प्रभाव डालना है</u>—नगर में नमक और ज्योति बनकर।

मसीह यीशु में पवित्र किए गए, पवित्र जन होने के लिए बुलाए गए
हम मसीह यीशु में पवित्र किए गए हैं। पवित्र किया गया (यूनानी *'hagizo'-'हागिज़ो'*) का अर्थ है अलग किया जाना, परमेश्वर के लिए समर्पित किया जाना। इसलिए हमें पवित्र जन कहा गया है (यूनानी *'hagios'-'हागियोस'*), अर्थात वे लोग जो पवित्र, अलग किए हुए, और परमेश्वर के लिए समर्पित हैं।

उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं
इस प्रकार, यद्यपि यह पत्री कुरिन्थ के पवित्र जनों के लिए लिखी गई थी, फिर भी यह पत्री आज हमारे लिए भी है, क्योंकि हम भी प्रभु यीशु मसीह के नाम को पुकारते हैं।

- **वचन 3:**

अनुग्रह (यूनानी *'charis'-'चारिस'*) एक व्यापक शब्द है और इसका उपयोग दैवीय अनुग्रह, दैवीय सामर्थ्य, दैवीय गुण (चरित्र), और दैवीय वरदानों के लिए किया जाता है, अर्थात वह अनुग्रह, सामर्थ्य, गुण और वरदान जो परमेश्वर से आते हैं।

शान्ति (यूनानी *'eirēnē' - 'आयरीन'*) का अर्थ है स्वास्थ्य, सामंजस्य, मेल, सुरक्षा, कुशलता, समृद्धि, और आनन्द; संक्षेप में, सम्पूर्ण कुशलता को दर्शाता है।

विश्वासियों के रूप में, परमेश्वर की ओर से अनुग्रह और शान्ति हमारी है। हम इसमें चल सकते हैं।

परमेश्वर ने जो किया है उसे पहचानना

4 मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्‍वर का धन्यवाद सदा करता हूँ, इसलिये कि परमेश्‍वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ
5 कि उस में होकर तुम हर बात में, अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए –
6 कि मसीह की गवाही तुम में पक्की निकली –
7 यहाँ तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो।
8 वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो।
9 परमेश्‍वर सच्चा है, जिसने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है।

जिस समय प्रेरित पौलुस पहला कुरिन्थियों लिख रहा है, उस समय कुरिन्थ की कलीसिया लगभग सात वर्षों की हो चुकी है।

- **वचन 4:**

मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्‍वर का धन्यवाद सदा करता हूँ

प्रेरित पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया में हो रही सभी अच्छी बातों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता है। जैसे-जैसे हम इस पत्री में आगे बढ़ते हैं, हम देखते हैं कि वहाँ कई ऐसे विषय और समस्याएँ भी थीं जिन्हें ठीक किए जाने की आवश्यकता थी, फिर भी प्रेरित ने सबसे पहले अच्छी बातों के लिए धन्यवाद किया। यह हमारे लिए जीवन का एक महत्वपूर्ण पाठ है। जो कुछ परमेश्वर ने किया है उसे

पहचानो। अच्छी बातों को देखो और धन्यवाद करो, साथ ही चुनौतियों, विषयों और कठिनाइयों का समाधान भी करो।

इसलिये कि परमेश्‍वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ
परमेश्वर का एक सामान्य अनुग्रह है, जो हम सब विश्वासियों के लिए उपलब्ध है (रोमियों 5:17)। **परमेश्वर का एक विशेष अनुग्रह** भी है, जो हम में से प्रत्येक को हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की बुलाहट और सौंपे गए कार्य को पूरा करने के लिए दिया जाता है (रोमियों 12:3; इफिसियों 3:3; इफिसियों 4:7)। हम यह भी देखते हैं कि एक कलीसिया समुदाय, अर्थात विश्वासियों के समुदाय पर भी एक विशेष अनुग्रह होता है। पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया पर इस विशेष अनुग्रह को पहचानता और स्वीकार करता है।

उदाहरण के लिए, APC- ए.पी.सी., में हम पर भी एक विशेष अनुग्रह है, जो हमें वह बनने और वह करने में सक्षम बनाता है जो हम हैं और जो हम करते हैं। हम अनुग्रह में बढ़ सकते हैं, अर्थात अपने जीवन में अनुग्रह की बढ़ी हुई मात्राओं तक पहुँच सकते हैं और उनमें चल सकते हैं (2 पतरस 3:18, याकूब 4:6)।

- **वचन 5:**

कि उस में होकर तुम हर बात में, अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए

पौलुस यह मानता है कि वे हर बात में धनी बनाए गए (यूनानी *'ploutizō' 'प्लूटिज़ो'* का अर्थ है 'धनी बनाना', जो आत्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की समृद्धि के लिए प्रयुक्त होता है), क्योंकि उन्हें परमेश्वर का वह अनुग्रह मिला जो यीशु मसीह के द्वारा उन्हें दिया गया था।

यह समृद्धि विशेष रूप से सब प्रकार की वाणी में (यूनानी *'logos' 'लोगोस'*: अर्थात जो कुछ भी बोला जाए) और सब प्रकार के ज्ञान में (यूनानी *'gnosis'- 'ग्नोसिस'*) दिखाई देती है। यह वाणी और ज्ञान संभवतः आत्मा के वाणी और प्रकाशन के वरदानों की ओर संकेत करता है, क्योंकि जैसे-जैसे वाक्य वचन 6–7 तक आगे बढ़ता है, पौलुस कहता है कि वे किसी भी वरदान में घटी नहीं रखते। इस पत्री के संदर्भ में यह आत्मा के वरदानों की ओर संकेत करता है। वाणी के वरदानों में अन्य भाषाएँ, भाषाओं की व्याख्या और भविष्यद्वाणी शामिल हैं। प्रकाशन के वरदानों में बुद्धि का वचन, ज्ञान का वचन और आत्माओं की पहचान शामिल हैं।

विश्वासियों के रूप में, परमेश्वर के दिए हुए अनुग्रह के कारण, हम यीशु मसीह के द्वारा सब बातों में धनवान किए गए हैं। आइए हम इसे घोषित करें: *"एक विश्वासी के रूप में, मैं परमेश्वर के दिए हुए अनुग्रह के कारण यीशु मसीह के द्वारा सब बातों में धनवान किया गया हूँ"*।

उसका अनुग्रह हमें आत्मा के वरदानों की अभिव्यक्ति में भी समृद्ध करता है।

- **वचन 6:**

कि मसीह की गवाही तुम में पक्की निकली

गवाही (यूनानी *'marturion' 'मार्चुरियन'*) का अर्थ है दिया गया प्रमाण; किसी साक्षी की गवाही। यह उसी यूनानी शब्द *'martus' 'मरतुस'* से निकला है, जिसका अनुवाद 'गवाह' किया गया है (लूका 24:48; प्रेरितों के काम 1:8)।

'मसीह की गवाही' का तात्पर्य मसीह के सुसमाचार से है, जो प्रमाण सहित आया और उनमें दृढ़ ठहराया गया (यूनानी *'bebaioō' 'बेबाईओ'*— अर्थात स्थापित करना, दृढ़ करना, सुरक्षित बनाना)।

इसलिए यीशु मसीह की गवाही या यीशु मसीह का सुसमाचार लोगों के पास इस प्रकार लाया जाना चाहिए, कि वह प्रमाणों के साथ आए, जिससे संदेश उनके भीतर दृढ़ता से स्थापित हो जाए। जैसा कि हम आगे अध्याय 2 में देखते हैं, पौलुस आत्मा और सामर्थ्य के प्रदर्शनों का उल्लेख करता है (2:4)।

- **वचन 7:**

यहाँ तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो

जब मसीह का सुसमाचार इस प्रकार से लाया जाता है, और जब परमेश्वर का अनुग्रह लोगों को सब बातों में समृद्ध करता है, तब पौलुस यह पहचानता है कि कुरिन्थ के विश्वासियों में आत्मा के वरदानों की किसी भी अभिव्यक्ति की कमी नहीं थी।

जब हम यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करते हैं, और यदि हम उसे उसी प्रकार करते हैं जैसे पौलुस ने किया, अर्थात आत्मा और सामर्थ्य के प्रदर्शनों के साथ, तो हम ऐसी कलीसियाई सभाएँ उत्पन्न करेंगे जो परमेश्वर के अनुग्रह में चलती हैं और आत्मा के सभी वरदानों की अभिव्यक्ति करती हैं, जिनमें सभी वाणी के वरदान और सभी प्रकाशन के वरदान शामिल हैं।

विचार करने योग्य कुछ बातें:

1) जैसा कि हम आगे इस पत्री में देखते हैं, कुरिन्थ की कलीसिया में बहुत सी समस्याएँ थीं, फिर भी आत्मिक वरदानों के विषय में उनमें कोई कमी नहीं थी। प्रेरित पौलुस उन्हें आत्मिक वरदानों को प्रकट न करने के लिए नहीं कहता। वह केवल उनके उचित उपयोग के लिए मार्गदर्शन देता है, और साथ ही सबको आत्मिक वरदानों की इच्छा रखने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह हमें सिखाता है कि जब हम एक कलीसिया के रूप में परिपक्व होते हैं, बढ़ते हैं, और अपनी कमज़ोरियों पर विजय पाते हैं, तब भी हमें आत्मा के वरदानों की प्रकटता को लगातार प्रोत्साहित करना, उसकी इच्छा रखना, और उसकी प्रचुरता में चलना चाहिए।

2) आत्मा के वरदानों की अभिव्यक्ति को आत्मिक परिपक्वता के बराबर नहीं ठहराया जाना चाहिए। आगे, तीसरे अध्याय में, पौलुस इन कुरिन्थी विश्वासियों को 'शिशु' और 'शारीरिक' कहता है, और फिर भी यही लोग पवित्र आत्मा के वरदानों की अभिव्यक्ति में किसी भी प्रकार की कमी नहीं रखते थे।

कलीसियाई समुदाय का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह भी है, कि हम मसीह के पुनः आगमन की आशा में जीवन बिताएँ।

इसलिए हम यहाँ सीखते हैं कि प्रेरित पौलुस ने न केवल यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार

किया, बल्कि इन कुरिन्थी विश्वासियों को आत्मा के वरदानों और यीशु मसीह के लौटने या आने के विषय में भी शिक्षा दी।

- **वचन 8:**

वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो।

यीशु मसीह इन विश्वासियों को अन्त तक दृढ़ ठहराएगा (यूनानी *'bebaioō'* *'बेबाईओ'*—अर्थात स्थापित करना, दृढ़ करना, सुरक्षित बनाना), ताकि वे हमारे प्रभु के दिन निर्दोष (बिना किसी आरोप के, जो निन्दा के योग्य न हो) ठहराए जाएँ।

यह कितनी बड़ी भरोसे की बात है! पौलुस एक ऐसी स्थानीय कलीसिया को पत्र लिखने की तैयारी कर रहा है जिसमें कई समस्याएँ हैं, फिर भी उसे पूरा भरोसा है कि प्रभु इस प्रकार कार्य करेगा कि वह उन्हें अंत तक दृढ़ और सुरक्षित रखेगा और उन्हें निर्दोष प्रस्तुत करेगा। यह बात फिलिप्पियों 1:6 से बहुत मिलती-जुलती है।

जब हम **धन्यवाद** की इस एक ही वाक्य-श्रृंखला, अर्थात वचन 4-8 तक को देखते हैं, तो हम अनुग्रह (वचन 4), समृद्धि (वचन 5), सुसमाचार की पुष्टि (वचन 6), आत्मा के वरदानों की अभिव्यक्ति (वचन 7), यीशु के लौटने की आशा (वचन 7), और अंत तक स्थापित किए जाने (वचन 8) को देखते हैं। पौलुस इन सभी बातों के लिए धन्यवाद कर रहा है, जो परमेश्वर ने इन कुरिन्थी विश्वासियों के जीवन में की थीं।

- **वचन 9:**

परमेश्वर सच्चा है, जिसने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है।

प्रेरित को यह पूरा भरोसा है कि ये कुरिन्थी विश्वासी अंत तक दृढ़ और सुरक्षित बने रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर विश्वासयोग्य है, और यही विश्वासयोग्य परमेश्वर है जिसने उन्हें बुलाया है।

विश्वासियों के रूप में हमें यीशु मसीह के साथ संगति में बुलाया गया है (यूनानी *'koinonia'* *'कोईनोनीय'* —अर्थात सहभागिता, सहभाग, साझेदारी, मित्रता और घनिष्ठता)। प्रेरित यूहन्ना भी कहता है कि हमें पिता और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ संगति में बुलाया गया है (1 यूहन्ना 1:3)। पौलुस कहता है कि हमें पवित्र आत्मा की संगति में भागी होना है (2 कुरिन्थियों 13:14)।

विश्वासी का जीवन परमेश्वरत्व—पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा—के साथ संगति का जीवन है। हमें परमेश्वर के साथ संगति—मेल-मिलाप, सहभागिता, साझेदारी, मित्रता और घनिष्ठता—के लिए बुलाया गया है।

एकता के लिए बुलाहट

अब प्रेरित पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया में उपस्थित समस्याओं और चिंताओं को संबोधित करने की ओर बढ़ता है।

**10 हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूँ कि तुम सब एक ही बात
कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।
11 क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है कि तुम में
झगड़े हो रहे हैं।
12 मेरे कहने का अर्थ यह है कि तुम में से कोई तो अपने आप को "पौलुस का," कोई "अपुल्लोस
का," कोई "कैफा का," तो कोई "मसीह का" कहता है।
13 क्या मसीह बँट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर
बपतिस्मा मिला?
14 मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि क्रिस्पुस और गयुस को छोड़ मैं ने तुम में से किसी को
भी बपतिस्मा नहीं दिया।
15 कहीं ऐसा न हो कि कोई कहे कि तुम्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा मिला।
16 और हाँ, मैं ने स्तिफनास के घराने को भी बपतिस्मा दिया; इनको छोड़ मैं नहीं जानता कि मैं
ने और किसी को बपतिस्मा दिया।
17 क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, वरन् सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी
शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।**

- **वचन 10:**

हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूँ कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।

प्रेरित पौलुस यह विनती प्रभु यीशु मसीह के अधिकार के साथ करता है।

यह वचन हमें स्पष्ट रूप से दिखाता है कि एक स्थानीय विश्वासी समुदाय को किस लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए और उसे बनाए रखना चाहिए।

- *एक ही बात कहो:* अर्थात हमारे विश्वास के विषय में और परमेश्वर के लोगों के रूप में हम सब एक ही बात कहें।
- *फूट न हो:* अर्थात विभाजन, दरार, अलगाव, टूटन, चीर दिया जाना—कोई भी ऐसी बात नहीं जो हमें अलग करे।
- *पूरी रीति से जुड़े रहो:* अर्थात ठीक किया जाना, पूर्ण किया जाना। बार्कले 'जुड़े रहो' के विषय में लिखता है: "यह एक चिकित्सकीय शब्द है, जो टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने, या उखड़े हुए जोड़ को सही स्थान पर लाने के लिए प्रयुक्त होता है। विभाजन अस्वाभाविक है और उसे चंगा किया जाना चाहिए।"
- *एक ही मन:* मन (यूनानी *'nous' 'नूस'*) से तात्पर्य समझने और जानने की क्षमता, अनुभव करने की शक्ति, तथा विचार करने, न्याय करने और निर्धारण की योग्यताओं से है।
- *एक ही मत:* अर्थात एक ही दृष्टिकोण या राय।

यह स्पष्ट है कि हम सब अलग-अलग व्यक्ति हैं और हमारे दृष्टिकोण, विचार, भावनाएँ और समझ में भिन्नताएँ हो सकती हैं। फिर भी हम यह चुनाव कर सकते हैं कि हम स्वयं को उस बात के साथ संरेखित करें जो यीशु मसीह की महिमा करती है और देह को मजबूत बनाती है। जैसा कि पौलुस अन्य स्थान पर कहता है, हम "मेल के बन्धन में आत्मा की एकता को बनाए रखने का यत्न करें" (इफिसियों 4:3)।

- **वचन 11–17:**

फूट का मतलब है झगड़े, विवाद।

तो कुरिन्थ के विश्वासियों के बीच विभाजन और झगड़ों का कारण क्या था?

स्थानीय कलीसिया समुदाय के विश्वासी अलग-अलग अगुवों के पक्ष लेने लगे थे: कोई पौलुस का, कोई पतरस का, कोई अपुल्लोस का, और कुछ तो मसीह के नाम पर अपने आप को दूसरों से अलग करने लगे थे। पौलुस इस बात की ओर संकेत करता है और विभाजनों के कारण को स्पष्ट करता है।

यहाँ हमारे लिए सीखने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पाठ है। हमें अपनी पहचान केवल यीशु मसीह में आधारित रखनी चाहिए, बिना किसी प्रकार के विभाजन और झगड़े उत्पन्न किए। परमेश्वर अपने लोगों की सेवा के लिए विभिन्न व्यक्तियों को बुलाता और खड़ा करता है। प्रत्येक अगुवा, कलीसिया और सेवकाई की अपनी विशेषताएँ होती हैं, जो उन्हें दिए गए अनुग्रह के अनुसार होती हैं। एक विश्वासी के रूप में हम उनके द्वारा आशीष पाते हैं, परन्तु हमारी पहचान उनसे नहीं है। हमारी पहचान किसी व्यक्ति, संप्रदाय या सेवकाई में नहीं है जिसने हमारी सेवा की हो।

- **वचन 17:**

क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, वरन् सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।

पौलुस निष्कर्ष निकालता है कि वास्तव में जो बात सबसे अधिक महत्वपूर्ण है वह सुसमाचार है। सुसमाचार, मसीह के क्रूस का संदेश है।

जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं, जितना संभव हो उतना स्पष्ट और सरल होकर, तब हम 'शब्दों की बुद्धी' पर निर्भर नहीं रहते—अर्थात अपनी बुद्धि, अपनी बोलने की कला आदि पर।

सुसमाचार की सामर्थ्य मसीह के क्रूस के संदेश में स्वयं निहित है और वह किसी भी रूप में मानवीय वाक्पटुता पर निर्भर नहीं करती।

क्रूस का संदेश

18 क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है।
19 क्योंकि लिखा है, "मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नष्ट करूँगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूँगा।"

[20] कहाँ रहा ज्ञानवान? कहाँ रहा शास्त्री? कहाँ रहा इस संसार का विवादी? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया?
[21] क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे।
[22] यहूदी तो चिह्न चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं,
[23] परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं, जो यहूदियों के लिये ठोकर का कारण और अन्यजातियों के लिये मूर्खता है;
[24] परन्तु जो बुलाए हुए हैं, क्या यहूदी क्या यूनानी, उनके निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है।
[25] क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है, और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है।

- **वचन 18:**

क्योंकि क्रूस की कथा... परमेश्वर की सामर्थ्य है
क्रूस का संदेश, परमेश्वर की सामर्थ्य है। जब हम लोगों के पास मसीह के क्रूस का संदेश लेकर आते हैं, तब परमेश्वर की सामर्थ्य उनके जीवन में पहुँचाई और लागू की जाती है।

- **वचन 21:**

संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना
मनुष्य अपनी ही बुद्धि के द्वारा परमेश्वर को नहीं जान सकता, न समझ सकता है और न ही पहचान सकता है। जैसा कि पौलुस आगे अध्याय दो में स्पष्ट करेगा, आत्मिक बातें प्राकृतिक मन से नहीं समझी जातीं, बल्कि पवित्र आत्मा की सहायता से समझी जाती हैं।

परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे
परमेश्वर ने लोगों के उद्धार के लिए एक ऐसी विधि चुनी है जो संसार को मूर्खता लगती है। उसने क्रूस के संदेश के प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों का उद्धार करना चुना है। कई बार हम मूर्ख दिखाई देते हैं, परन्तु वास्तव में उसी समय परमेश्वर की सामर्थ्य प्रकट हो रही होती है, जिससे लोगों के जीवन में उद्धार आता है।

वचन 22–24:

[22] यहूदी तो चिह्न चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं,
[23] परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं, जो यहूदियों के लिये ठोकर का कारण और अन्यजातियों के लिये मूर्खता है;
[24] परन्तु जो बुलाए हुए हैं, क्या यहूदी क्या यूनानी, उनके निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है।

यहूदी बहुत आत्मिक लोग थे और अलौकिक प्रकटताओं (चिन्हों) की खोज में थे। यूनानी बौद्धिक लोग थे और उन बातों में रुचि रखते थे जो मन (बुद्धि) को आकर्षित करती थीं।

परन्तु दोनों प्रकार के लोगों के लिए हमारे पास केवल एक ही संदेश है, अर्थात मसीह के क्रूस का संदेश। हम क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह का प्रचार करते हैं। कुछ यहूदियों को यह निर्बलता का चिन्ह प्रतीत होता है, सामर्थ्य का नहीं, इसलिए वे इसे स्वीकार करने में कठिनाई अनुभव करते हैं और इससे ठोकर खाते हैं। यूनानियों के लिए यह संदेश मूर्खता जैसा लगता है। फिर भी, मसीह के क्रूस का यही संदेश वास्तव में परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर की बुद्धि है। चाहे यहूदी हों या यूनानी, जो विश्वास करते हैं, वे मसीह के क्रूस के संदेश में परमेश्वर की सामर्थ्य का अनुभव करते हैं और उसकी बुद्धि को पहचानते हैं।

- **वचन 25:**

क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है, और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है।

यद्यपि सुसमाचार का प्रचार देखने में मूर्खता और निर्बलता प्रतीत हो सकता है, परन्तु सुसमाचार—अर्थात मसीह के क्रूस का संदेश—वास्तव में मनुष्य की बुद्धि और मानवीय महानता से कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

इसी कारण हम सुसमाचार, अर्थात मसीह के क्रूस के संदेश पर पूरा भरोसा रख सकते हैं। सुसमाचार ही परमेश्वर की सामर्थ्य भी है और परमेश्वर की बुद्धि भी। सुसमाचार के प्रचार के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ्य कार्यान्वित की जाएगी और परमेश्वर की बुद्धि प्रकट की जाएगी। इसलिए हम निर्भीक और निस्संकोच होकर सुसमाचार को साझा करते हैं।

परमेश्वर की बुलाहट को समझना

26 हे भाइयो, अपने बुलाए जाने को तो सोचो कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए।
27 परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करे;
28 और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन् जो हैं भी नहीं उनको भी चुन लिया कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए।
29 ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करने पाए।
30 परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा;
31 ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, "जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे।"

ये वचन प्रकट करते हैं कि परमेश्वर किस प्रकार कार्य करते हैं।

परमेश्वर लोगों को उनकी सांसारिक उपलब्धियों के आधार पर नहीं बुलाते।

परमेश्वर इस प्रकार से कार्य करते हैं कि उनकी सामर्थ्य और उनकी बुद्धि हमारे जीवनों के द्वारा प्रकट हो। वह निर्बलों को लेते हैं, उनके द्वारा अपनी सामर्थ्य और बुद्धि प्रकट करते हैं, और संसार को

चकित कर देते हैं। इसी प्रकार, वह मूर्ख, नीच, तुच्छ, और जिन्हें कुछ भी नहीं समझा जाता, ऐसे लोगों के साथ कार्य करते हैं, और उनके द्वारा अपनी सामर्थ्य और बुद्धि प्रकट करते हैं, जिससे लोग यह जान लें कि यह सब परमेश्वर ने ही किया है।

ताकि कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के सामने यह मानकर घमण्ड न कर सके, कि यह सब उसकी अपनी योग्यता के कारण हुआ है।

यह हम में से प्रत्येक के लिए महान आशा लाता है। परमेश्वर हम में से हर एक के जीवन में अपनी बुद्धि और अपनी सामर्थ्य को प्रकट करेंगे, और हम में से प्रत्येक के द्वारा उनकी महिमा होगी।

- **वचन 30:**

जो कुछ भी होता है, वह सब इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं हमारे लिए मसीह यीशु में वो किया है।

परमेश्वर ने हमें मसीह यीशु में स्थापित किया है। परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ एक किया है। हम मसीह के साथ एकता में हैं।

परमेश्वर ने मसीह को हमारे लिए बुद्धि, धार्मिकता, पवित्रीकरण और छुटकारा ठहराया है।
मसीह में, हमें परमेश्वर की बुद्धि प्राप्त है।
मसीह में, हमें परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त है।
मसीह में, हमें पवित्रता (पवित्रीकरण) प्राप्त है।
मसीह में, हमें छुटकारा प्राप्त है।
मसीह में हमारे पास यह सब, और इससे भी कहीं अधिक है।

- **वचन 31:**

इसलिए, हम जो कुछ भी करते हैं, उसमें हमारा घमण्ड केवल प्रभु में होता है।

संदर्भ में

जिस समस्या को प्रेरित पौलुस संबोधित कर रहा है, उसके संदर्भ में यदि हम इसे देखें, तो निष्कर्ष स्पष्ट है—कि हम में से किसी को भी मनुष्यों पर घमण्ड नहीं करना चाहिए। न पौलुस पर, न पतरस पर, न अपुल्लोस पर। हमारा ध्यान यीशु पर होना चाहिए। हमारा संदेश सुसमाचार है—मसीह का क्रूस। हम जानते हैं कि यह संदेश ही परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर की बुद्धि है। परमेश्वर ने हमें हमारी स्वाभाविक स्थिति या प्राकृतिक योग्यताओं के कारण नहीं बुलाया। वह हमें जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करता है, और फिर हमारे द्वारा अपनी बुद्धि और अपनी सामर्थ्य को प्रकट करता है, ताकि महिमा केवल उसी की हो। यह सब वह मसीह यीशु में हमारे लिए करता है।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार सितंबर 01, 2019
1 कुरिन्थियों अध्याय 1

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *1 कुरिन्थियों अध्याय 1*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1) *हालाँकि हम जानते हैं कि ऐसे कई क्षेत्र हो सकते हैं जिनमें हम में से प्रत्येक को आत्मिक रूप से बढ़ने की आवश्यकता है, फिर भी आपके आत्मिक जीवन में ऐसी कौन-सी बातें हैं जिनके लिए आप धन्यवाद दे सकते हैं?*

2) यह देखते हुए कि हम सभी भिन्न हैं, अलग-अलग पृष्ठभूमि, अनुभव आदि के साथ, क्या वास्तव में यह अपेक्षा करना यथार्थवादी है कि एक स्थानीय कलीसिया वैसी हो जैसी बनने के लिए पौलुस हमसे 1 कुरिन्थियों 1:10 में विनती करता है? इसे संभव बनाने के लिए हम कैसे कार्य कर सकते हैं?

3) वचन 17-25 में पौलुस सुसमाचार, अर्थात मसीह के क्रूस के संदेश के विषय में क्या प्रकट करता है, इस पर चर्चा करें। यह आपको सुसमाचार साझा करने के लिए किन तरीकों से प्रोत्साहित करता है?

4) चर्चा करें कि वचन 27–31 में पौलुस यह कैसे प्रकट करता है कि परमेश्वर किस प्रकार कार्य करता है ताकि हमारे जीवन में केवल उसी की महिमा हो। यह बात आपको किस प्रकार प्रोत्साहित करती है?

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1) परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए

2) कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।

3) BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।

यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/Hindi
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org